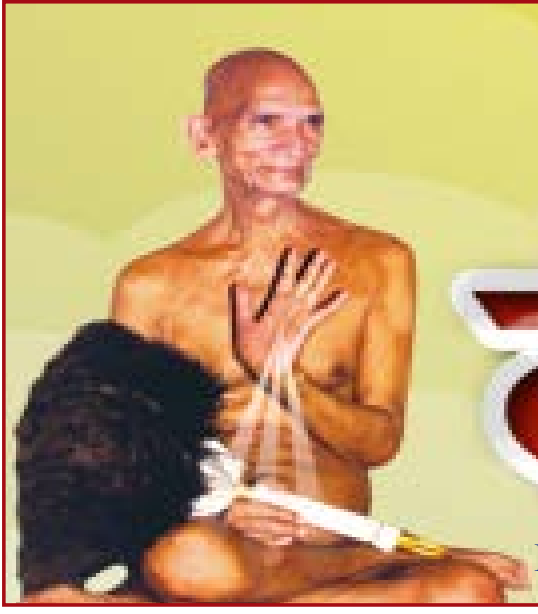

जैनाचार

www.jainachar.com Daily

Issue: 141
27 August 2020

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

i;q"k.k ioZ ds fnu vkt tSu èkeZ ds orZeku esa fojkftr 50 o"kksZa ls Hkh vfèkd le;kofèk ls lkèkukjr 5 egku lUrksa ds n'kZu

x.kkfèkifr x.kèkjkpk;Z Jh dqFkqlkxj th HkxoUr o fLFkojkpk;Z Jh lEHkolkxj th HkxoUr vki nksuks xq#vksa dh nh{kk ,d gh fnu ,d gh LFkku ij lu 1967

fxjukj xkSjo vkpk;Z Jh fueZy lkxj th HkxoUr nh{kk&1967

lUr f'kjksef.k vkpk;Z Jh fo|klkxj th HkxoUr nh{kk 1968

okRlY;okfjèk vkpk;Z Jh oèkZeku lkxj th HkxoUr nh{kk&1969

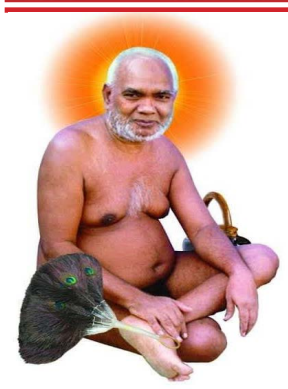

ije iT; fxjukj xkSjo vkpk;Z 108 Jh fueZy lkxj th egkjkt

ije iT; fxjukj xkSjo vkpk;Z 108 Jh fueZy lkxj th egkjkt dk LokLF; fiNys 8&10 fnu ls vR;fèkd [kjkc gS vki lHkh ls fuosnu gh fd iT; vkpk;Z Jh 'kh?kz LoLF; gks bl Hkkouk ds lkFk vki lHkh .keksdkj egkeU= dh çfrfnu vfèkd ls vfèkd tki; djs ,oe nsljksa dks Hkh çfjr djs

आत्म प्रक्षालक : दशलक्षण पर्व

प.पू. गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी

उत्तम सत्य : सत्य धर्म आत्मा का सुंदर धर्म है लेकिन प्राय : आजकल ये गुण लुप्त सा होता जा रहा है, दूसरे के ह्रदय को दु :ख पहुंचाने वाले कर्कश, कटुक, सावध वचनों का बोलना झूठ है अत : उभय लोक में सुख देनेवाले सत्य धर्म का आचरण झूठ पाप त्याग कर करो।

सत्य के विभिन्न अर्थ है, वस्तु का स्वभाव, बोलने की पद्धति, अतिशय विशेष, वस्तु के वास्तविक स्वभाव धर्म के लिए भी सत्य कहा है। इसके अतिरिक्त सत्य को अन्य प्रकार से भी परिभाषित किया गया है। सते हितं यत् कथ्यते तत् सत्यं। भलाई के लिए जो कहा जाय वह सत्य है। सत्सु प्रशस्तेषु-जनेषु साधु वचनं सत्यम् इति उच्यते। अच्छे पुरूषों के साथ साधु के साथ साधू वचन बोलना सत्य है। सत्य धर्म-असीम होता है, विश्व में ऐसा एक भी परमाणू नहीं जिसमें सत्य न हो, दरअसल सत्य तो एक प्रतीति है, अनुभूति है, जो कि शब्दों के द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती तथा जो शब्दों के द्वारा व्यक्त होता है वह सत्य नहीं अपितु सत्यांश है। उसी सत्यांश के सहारे हमें शाश्वत सत्य की उपलब्धि होती है। अत : हे भव्य आत्माओं! उस सत्यधर्म का पालन करो व असत्य का परित्याग करो क्योंकि असत्य दुर्गति का कारण है अत : आप आत्मा के सत्य धर्म को, सत् स्वरूप को भाषा समिति व वचन गुप्ति के माध्यम से पालन करे और सत्य स्वरूप का ध्यान करें, तभी सत्य धर्म सार्थक होगा।

Hkkoiw.kZ&J)katfy&f'kok

ललितपुर का एक होनहार युवा अल्पायु में कोरोना से जंग हर गया। छत्रसालपुरा निवासी नरेन्द्र जैन छोटे पहलवान का पुत्र अमन जैन शिवा (उम्र करीब 31 वर्ष) पिछले कुछ दिनों पहले कोरोना की चपेट में आ गया था।

शिवा को करीब एक सप्ताह पहले महारानी लक्ष्मीबाई मेडिकल कॉलेज झांसी में भर्ती कराया गया था। शिवा बीते करीब एक सप्ताह से प्ब् में भर्ती था। कल दिक्कत बढ़ने पे उसे वेंटिलेटर पे शिफ्ट कर दिया गया था। परंतु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था और आज सुबह शिवा के निधन की दुरूखद खबर सबके सामने आ गई। होनहार युवा के निधन की खबर से शहर में मातम सा पसर गया है। लोगो का कहना है कि शिवा बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति का लड़का था अक्सर गुरु जी का विहार हो रहा हो या कोई आयोजन गुरु जी की सेवा मैं सफेद कपड़ो मैं यह युवा सदा संलग्न रहता था, और पर्युषण पर्व के चलते संयमित दिनचर्या के अनुसार भोजन ले रहा था। उसका इस तरह असमय दुनिया छोड़ के जाना बहुत ही दुखदायी है।

परिवार में चार माह में घटित दूसरी ह्रदय विदारक घटना से सभी का मन द्रवित है।

nl y{k.k egk ioZ dk] ipe y{k.k mÙke lR; èkeZ

अभी तक हमने चारो कषाय के अभाव पूर्वक, आत्मा के धर्मो के लक्षणों को समझा है। क्षमा का सदभाव, क्रोध का अभाव..मार्दव का सदभाव यानी मान का अभाव, इसी तरह अन्य समझना। और जब हमको यह चारो कषाय का और इन के अभाव रूप जीव के धर्म के लक्षण रूप 'उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जवऔर उत्तम शौच धर्म प्रकट होते है तब अपना स्वयं का भी 'सत्य स्वरूप' समझ में आने की विधि जानने की रुचि, जिज्ञासा जाग्रत हो जाती है। और वह सत्य स्वरूप यह है कि' मैं सदा काल ज्ञान स्वरूप भगवान आत्मा हूँ और यह सारे विभाव भाव कर्मोदय जन्य है, जो आते है, दिखते तो आत्मा में ही है परन्तु यह सब मेरे नही है..मेरे स्वभाव भाव नहीं है और तब प्रकट होता है, 'उत्तम सत्य धर्म'

कैसा है उत्तम सत्य धर्म?? कि मैं क्रोधी, मानी, मायाचारी या लोभी, लालची नही हूँ। यह कषाय तो उन कसाई के समान है, जो निर्दयता पूर्वक निरीह जीवो के प्राणों का घात कर देता है, ठीक ऐसे ही यह कषाय आत्मा के सुख गुण को घात कर देती हैऔर यह जीव सुख स्वरूप होते हुए भी दुख और आकुलता का ही वेदन करता है। अब इस जीव को स्वयं से ही सच्चा प्रेम हो जाता है, अर्थात मिथ्यात्व का अभाव और सम्यक्त्व का सदभाव और तब जीव के मन में, वचन में, क्रिया कलापो में, श्रद्धा में, ज्ञान में, आचरण में एक मात्र 'सत्य' का प्रादुर्भाव उत्पन्न होजाता है। इसे कहते है 'उत्तम सत्य धर्म'। सभी भव्य जीव अपने जीवन में उत्तम सत्य धर्म का स्वरूप समझे और प्रकट करे। यही मंगल भावना....

उपवास की उत्कृष्ट साधना

घर घर मंदिर...घर घर भगवान...